Volume-7, No. 1 Feb.-2020, pp. Hin.29-32

चीन की विस्तारवादी नीति एवं भारत–भूटान की सामरिक सुरक्षा चिन्ता

श्री प्रमोद कुमार, शोधार्थी
राजनीति विज्ञान विभाग,
एम.एम.एच. कालेज गाजियाबाद उत्तर–प्रदेश भारत।
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ उत्तर–प्रदेश भारत।

सारांश–
सुरक्षा की दृष्टि से भारत के लिए भूटान का भू–सामरिक महत्व है। चीन की नीति हमेशा से एक विस्तारवादी देश की रही है। चीन हमेशा अपने सभी पड़ोसी देशों की सीमाओं पर बुरी नजर लगाए रहता है। जिसमें से भारत एवं भूटान भी सम्मिलत है। जैसे की आप जानते हो कि डोकलाम स्थित भूटान की धटना चीन द्वारा समान्य संघर्ष की घटना नही थी। बल्कि चीन इस सामरिक महत्व के क्षेत्र में सड़क बनाकर अपना कब्जा करना चाहता था। जिससे भूटान और भारत की सुरक्षा को गंभीर खतरा उत्पन्न होने की स्थिति बन गई थी चीन हिन्द महासागर में भी अण्डमान निकोबार द्वीप समूह से लगभग 45 किलोमीटर दूरी पर अपना अड्डा बनाए हुए है। यही नही श्रीलंका के हामनटोटा एवं पाकिस्तान ग्वादर बन्दरगाह को अपने अड्डो के रूप में विकसित कर रहा है। अगर देखा जाए तो चीन भारत की घेराबन्दी करने में सफल हो रहा है। जिसका प्रभाव भारत की समुद्रीक सुरक्षा एवं भारत और भूटान के व्यापार पर पड़ेगा। डोकलाम की घटना के दौरान जिस प्रकार से चीन भारत के विरूद्ध अपना रूख अपना रहा है। या अपनाया है। इससे यह स्पष्ट होता है। कि भविष्य में चीन भारत की उत्तरी सीमाओं पर अपनी हस्तेक्षप कर भारत पर सामरिक दबाव बनाता रहेगा।

मुख्य शब्द– भूटान, डोकलाम, स्त्रातेजिक

परिचय–

भूटान हिमालय पर बसा दक्षिण एशिया में एक छोटा महत्वपूर्ण लैण्डलॉक देश है। इसकी जनसंख्या लगभग 8 लाख है भारत भूटान के सम्बंधो में जो गहराई है। वह चीन–भूटान सम्बन्धों में दिखाई नहीं देती है। भारत एवं भूटान के बीच नजदीकी दोनों देशों की भौगोलिक, राजनैतिक एवं आर्थिक कारणों से भी है। भारत और भुटान सम्बन्ध मुख्य रूप से 1910 ब्रिटिश भारत एवं भूटान समझौते 1949 की भारत–भूटान संधि एवं भारत–भूटान मित्रता संधि 2007 के द्वारा संचालित होते रहे है। भारत एवं चीन दोनो को स्त्रातेजिक एवं सुरक्षा कारणों से भूटान की महती आवश्यकता है। भूटान के लोग अपने को डैकला (गरजने वाला नागदैत्य) की भूमि का नागरिक कहते है। भूटान के पास जल सेना एवं वायु सेना नही है। भारत–भूटान का सबसे बड़ा व्यापारिक एवं विकास का साझेदार है भूटान के विदेशी मामलों रक्षा, अर्थव्यवस्था, व्यापार, तकनीकी एवं सुरक्षा मामलों में भारत पर निर्भरता है। अतः स्वभावतः भारत एवं भूटान के बीच कोई सीमा विवाद नहीं है। दूसरी ओर चीन के साथ भूटान के सीमा एवं क्षेत्रीय विवाद है। भूटान का कुल क्षे0 लगभग 47000 वर्ग किलोमीटर हैं। चीन के साथ भूटान की 470 km लम्बी सीमा है। भारत भूटान के साथ 699 Km लम्बी सीमा साझा करता है जो इस प्रकार हैं। सिक्किम–32 Km, पं0 बंगाल–183 km, असम–267 km, अरूणांचल प्रदेश–217 Km, सीमा लगी हुई है।

भूटान विश्व की सबसे छोटी अर्थव्यवस्थाओं में से एक हैं। आर्थिक ढांचा मुख्य रूप कृषि वन क्षेत्रों और यहां निर्मित पनबिजली के भारत को विक्रय पर निर्भर है। ऐसा माना जाता है। कि इन तीनों चीजों से भूटान की सरकारी आय का 75% आता है। कृषि जो यहां के लोगों का आधार है। इस पर 90% से ज्यादा लोग निर्भर है। भूटान की मुद्रा डुलट्रम या न्यूलटम है। 2016 में प्रति व्यक्ति GDP 2773.55 USD विश्व बैंक के अनुसार है। बौद्ध धर्म यहां का राज्य धर्म है। भूटान 18 जुलाई 2008 से एक सवैंधानिक राजतन्त्र है। भूटान का राष्ट्रीय खेल तींरदाजी है। भूटान के लोगो की अलग–अलग वेशभूषा, खानपान एवं त्यौहार है। वर्तमान में भूटान 52 देशों एवं यूरोपीय संघ के

साथ राजनायिक सम्बन्ध है। भूटान संयुक्त राष्ट्र संघ, दक्षेस एवं बिम्सटेक का भी सदस्य है।

भूटान में भारत के सामरिक हितः

भूटान भारत के सामरिक हितों की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। भूटान सार्क का सदस्य है और भारत के पक्ष में पाकिस्तान के खिलाफ वह सार्क समिट का बहिष्कार भी कर चुका है। डोकलाम जैसा प्रकरण भूटान का भारत के लिए महत्व स्पष्ट करता है। डोकलाम पठार तिब्बत की चुंबी घाटी, भूटान की हा घाटी और सिक्किम के त्रिकोणीय बिंदु पर स्थित है जहां चीन ने एक सड़क निर्माण का कार्य शुरू किया था। भारत और भूटान ने अपने साझे सामरिक हितों के आधार पर मिलकर चीन के इस कृत्य का पुरजोर विरोध किया था। चीन और भूटान के बीच इसके अलाव जकारलूंग और पारूमलुंग जैसे क्षेत्र को लेकर भी विवाद रहे हैं। भारत का भूटान के साथ बिम्सटेक के जरिए भी क्षेत्रीय सहयोग का संबंध है। डोकलाम इलाके भी सामरिक स्थिति को लेकर भी चीन ने क्षेत्रीय असंतुलन पैदा करने की कोशिश की है। 1988 और 1998 में भूटान चीन के बीच डोकलाम को लेकर समझौता हुआ था कि आपसी सहमति और विचार विमर्श से ही इससे जुड़े किसी भी मामले को सुलझाया जाएगा। ऐसा ही समझौता भारत चीन मे 2012 में हुआ था कि डोकलाम के किसी प्रश्न पर फैसला भारत भूटान और चीन सर्वसम्मति बना कर ही करेंगे। लेकिन चीन ने इन सभी समझौतों का उल्लंघन कर डोकलाम में भूटान और भारत क्षेत्रीय अखंडता को ख़तरे में डालने की कोशिश की और अभी भी इस मुद्दे पर उसके मंसूबे बहुत साफ नहीं है। डोकलाम इलाका सामरिक रूप से वहां है जहां चीन और भारत के उत्तर–पूर्व में मौजूद सिक्किम और भूटान की सीमाएं मिलती है। भूटान और चीन दोनों इस इलाके पर अपना दावा करते हैं और भारत भूटान के दावे का समर्थन करता है। यह वही इलाका है जो भारत को सेवन सिस्टर्स नाम से मशहूर उत्तर पूर्वी राज्यों से जोड़ता है और सामरिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण है। भारत भूटान के साथ 699 किलोमीटर लंबी सीमा साझा करता है।

भारत भूटान एशियाई विकास बैंक के क्षेत्रीय कार्यक्रम साउथ एशियन सब रीजनल इकनॉमिक कोऑपरेशन प्रोग्राम यानि सासेक कार्यक्रम से भी जुड़े रहे हैं। भारत की पड़ोसी प्रथम की नीति की सबसे मजबूत कड़ी इस समय भूटान ही है। समय और देशकाल के साथ भूटान ने अपनी भारतीय निष्ठा को व्यक्त भी किया है। तिब्बत, नेपाल, चीन को एक साथ भारतीय हितों के विपरीत काम ना करने देने में भूटान किसी ना किसी रूप में अपनी प्रभावी भूमिका निभा सकता है। भूटान और भारत के संबंधों को लेकर चीन काफी असहज रहा है। भारत भूटान के बीच मजबूत आर्थिक, सांस्कृतिक, सामरिक, राजनयिक संबंध से चीन कुपित रहा है।

भारत के लिए भूटान का सामरिक एवं सुरक्षा महत्व

वर्तमान प्रधानमंत्री ने अपनी पहली विदेश यात्रा के लिए भूटान को चुना। भारत के लिए भूटान का कितना महत्व है? यह इससे स्पष्ट हो जाता है। अपनी यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री ने 'भारत के लिए भूटान एवं भूटान के लिए भारत का नारा दिया। भारत के लिए भूटान का निम्न सामरिक एवं सुरक्षा महत्व है।

1. यदि भूटान एक समरस राष्ट्र के रूप में भारत के साथ रहता है तो इससे भारत की अन्तर्राष्ट्रीय छवि एवं हैसियत में वृद्धि होती है। आवश्यकता पड़ने पर कुछ हद तक भारत द्वारा भूटान का स्त्रातेजिक लाभ लिया जा सकता है।
2. भूटान भारत एवं चीन के बीच एक मध्यवर्ती राष्ट्र है। भारत का वहाँ से प्रभाव कम होने की स्थिति में चीन अविलम्ब उस रिक्ता को भरने के लिए आतुर है। भारत नेपाल एवं भूटान में सुरक्षा एवं सामरिक कारणों से चीन की उपस्थिति को नहीं सहन कर सकता है क्योंकि चीन पहले से ही भारत को अपनी परिधि में लेने का प्रयास कर रहा है।
3. चीन डोलाम क्षेत्र पर अपना अधिकार चाहता है। डोकलाम 269 वर्ग किमी0 क्षेत्रफल वाला एक छोटा पठारी क्षेत्र है जो भूटान–चीन–भारत के सीमाई मिलन बिन्दु के नजदीक भूटान एवं चीन के बाद विवादित क्षेत्र है। डोकलाम पठार के पश्चिमी किनारे पर 'डोक ला के पास है। जो सिक्किम एवं तिब्बत को भी जोड़ता है। डोक ला पास की सुरक्षा भारत करता है। डोकलाम पठार के भूटानी भू–भाग की सुरक्षा भूटान स्वयं करता है। यहाँ से भारत का सिलीगुरी कारिडोर अत्यन्त नजदीक है जिसे चिकन नेक भी कहा जाता है। यह भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र को सड़क एवं रेलमार्ग से मुख्य भारत से जोड़ता है। भारत की असम एवं अरूणांचल प्रदेश की समीई चौकियों को रसद आदि भी इसी चिकन नेक के रास्ते से आपूर्ति की जाती है। युद्ध जैसी स्थिति में यह क्षेत्र अति संवेदनशील रहेगा। अतः इस क्षेत्र से चीन को दूर रखने के लिए भी भारत को भूटान आवश्यकता है।
1. भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में विप्लव की स्थिति है। यहाँ के विप्लवी समूह भूटान के जंगलों में शरण लेते रहे हैं। भूटान की सेना ने इनके खिलाफ अभियान चलाकर उन्हें वहाँ से हटाया है।

2. भारत भूटान से उसकी अतिरिक्त जल–विद्युत का आयात कर सकता है। भूटान की बड़ी जल–विद्युत परियोजनायें भारत के सहयोग से संचालित हो रही हैं।
3. भूटान के साथ बढ़ते हुए व्यापार एवं वाणिज्य से असम एवं अरूणांचल प्रदेश जैसे राज्यों को आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है।
4. भूटान एवं चीन के बीच पूर्व नियोजित बैठक एवं कुछ समझौते हुए। भारत द्वारा अधिकारिक तौर पर भूटान के सामान्य सुरक्षा के मुद्दों को उठाया गया। इस कारण एवं कुछ अन्य कारणों से भूटान में आम चुनाव से पहले भारत से दी जाने वाली रसोई गैस एवं केरोसीन पर से सब्सीडी हटा ली। यद्यपि भारत के इस कदम की भूटान में कई तरह से आलोचना हुई।

भूटान चीन सम्बन्ध एवं भूटान में चीन के सुरक्षा एवं सामरिक हित

अपनी स्त्रातेजिक भौगोलिक स्थिति के कारण भूटान का चीन के लिए स्त्रातेजिक महत्व है। ऐसा माना जाता है कि माओ ने 1949 में तिब्बत पर अधिकार करने के समय 'च्यांग काई शेक' से कहा था कि तिब्बत चीन की हथेली एवं नेपाल, सिक्किम, भूटान, नेफा (अरूणांचल प्रदेश) एवं लद्दाख पाँचों ऊँगलियों के समान हैं। उन्होंने कहा कि ये चीन के भू–भाग हैं जिन्हे मुक्त कराना होगां चुम्बी घाटी एवं डोकलाम क्षेत्र में चीन की बजाय भारत बेहतर स्थिति में है। इस क्षेत्र में भारत के एक सैनिक के मुकाबले चीन को नौ सैनिक उतारने पड़ेंगें 1962 के भारत–चीन संघर्ष के विराम के बाद माओ आदान–प्रदान के द्वारा सीमा विवाद का हल चाहते थे। वे सिक्किम एवं अरूणांचल प्रदेश के बदले लद्दाख के कुछ क्षेत्रों को छोड़ना चाहते थे। यद्यपि चीन के कुछ जानकार इससे सहमत नहीं थे तथा भारत ने भी इसमें कोई रूचि नहीं दिखाई। चीन से संघर्ष की स्थिति में यदि अक्साई–चिन क्षेत्र में भारत पर दबाव पड़ता है तो इस क्षेत्र में भारत चीन पर दबाव डाल सकता है। अतः भूटान एवं अरूणांचल प्रदेश के क्षेत्र में चीन भारत पर अपनी भू–स्त्रातेजिक श्रेष्ठता चाहता है।

चीन द्वारा भूटान पर भारत से परामर्श के बजाय सीधे चीन–भूटान सीमा–विवाद पर बात करने के लिए दबाव डाला जाता रहा है। 1958 में चीन द्वारा उत्तर–पूर्वी भूटान के एक बड़े भू–भाग को अपने मानचित्र में तिब्बत के एक भाग के रूप में दिखाया गया था। इसी के बाद तत्कालीन चीन को चेतावनी देते हुए भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नहेरू ने कहा था कि हिमालय क्षेत्र में किसी के भी हस्तक्षेप को भारत स्वीकर नहीं करेगा। चीन द्वारा तिब्बत क्षेत्र के बलपूर्वक अधिग्रहण (1959) से भूटान चीन के प्रति अधिक संशकित हुआ। बाद के वर्षों में तिब्बती शरणार्थी भी भूटान पहुँचने लगे जिससे भूटान को समस्यायें उत्पन्न हुई और तिब्बत सीमा को सील कर दिया गया। इसके बावजूद भूटान में घुस चुके तिब्बती लोगों की आस्था दलाई लामा एवं अपनी संस्कृति में बनी रही और अन्तर्मन से वे भूटानी संस्कृति एवं भूटान को नही अपना सके। यह समस्या कई दशकों तक बनी रही।

1960 के बाद चीनी शासकों ने कहा कि भूटान सहित सभी हिमालयी राज्य जो कि भारत के अधिकार में है उन्हें मुक्त कराना चाहिए। इससे भूटान एवं चीन के रिश्ते में दरार अधिक बढ़ी। परन्तु बाद में चाऊ–एन–लाई ने माना कि चीन किसी भी तरह से भारत भूटान सम्बन्धों के खिलाफ नहीं रहेगा 1962 में भारत की पराजय से भूटान की जनता में भूटान की सुरक्षा भारत के द्वारा हो सकने पर चर्चा होने लगी। चीन द्वारा भी भूटान पर भारत से सम्बन्ध तोड़ने के लिए बनाया गया। उसने भूटान को समय–समय पर सहायता देने का भी प्रलोभन दिया और चीन भूटान सीमा पर बार–बार हस्तक्षेप भी करता रहा।

इसके बावजूद 1974 में भूटान के शासक के राजतिलक के कार्यक्रम में एक चीनी प्रतिनिधि मण्डल शामिल हुआ। 1979 में चीन में भूटान के सीमान्त क्षेत्र पर हमला किया। भूटान इसे भारत के परामर्श से सुलझाना चाहता था। जबकि चीन उस पर द्विपक्षीय तरीके से ही सुलझाने पर दबाव डालता रहा। अन्ततः दोनो देशों के बीच सीमा विवाद् को हल करने के लिए कई चक्र की वार्ता के बावजूद कुछ ठोस समाधान नहीं निकल सका। चीन–भूटान के मध्य 1998 में हुई 12वें दौर की वार्ता में यह समझौता हुआ कि 1959 से पहले की मौजूदा चीन–भूटान सीमा को यथावत रखा जाय तथा सीमा पर एकपक्षीय कार्यवाही नहीं हो।

ऐसा माना जाता है कि नई दिल्ली को अधेरे में रखकर जून, 2012 में भूटान एवं चीन के बीच पूर्व नियोजित बैठक एवं कुछ समझौते हुए। भारत द्वारा आधिकारिक तौर पर भूटान के सामान्य सुरक्षा के मुद्दों पर भी नई दिल्ली को अंधेरे में रखने तथा पारदर्शित की कमी को उठाया गया। इस कारण एवं कुछ अन्य कारणों से भूटान में आम चुनाव से पहले भारत से दी जाने वाली रसोई गैस एवं केरोसीन पर से सब्सीडी हटा ली। यद्यपि भारत के इस कदम की भूटान में कई तरह से आलोचना हुई।

चीन–भूटान सीमा विवाद

अंग्रेजों के भारत छोड़ने के पश्चात् चीन व भूटान के संबंधों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं देखा गया, परन्तु

कुछ समय पश्चात् एक महत्वपूर्ण परिवर्तन भूटान के जनसमुदाय में यह देखा गया था कि अपने राष्ट्र को बाहरी शक्तियों से किस प्रकार बचाया जाए व उनका विकास किया जाए। चूंकि ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन भूटान का अधिक महत्व नहीं था इसलिए उसके विकास का उचित ध्यान नहीं दिया गया। एक बहुत बड़ा कारण भूटान के जनसमुदाय के मानसिक जागरण में भारत का सकारात्मक रवैया था जो कि भूटान को एक सम्प्रभुत्व सम्पन्न स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में मान्यता देता है। परन्तु चीन का रवैया एक हद तक भूटान के विकास में बाधा रहा है।

चीनियों का आकर्षण भूटान के प्रति 1954 मे फिर जाग्रत हुआ, जब साम्यवादी चीन ने अपनी पुस्तक 'द ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ माडर्न चाईना' में भूटान को एक खोए हुए राज्य की संज्ञा दी। अब भूटान के समक्ष एक नई समस्या थी कि चीन भूटान के एक बहुत बड़े भू–भाग को अपना हिस्सा घोषित करता है। चीन की एक पत्रिका 'चाईना फिक्टोरियल' के जुलाई 1958 के अंक में चीन का मानचित्र दर्शाया गया था, जिसमें भुटान के 300 वर्ग मील उत्तर पश्चिमी भू–भाग को अपना हिस्सा घोषित करता था। अगस्त 1958 में भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा इस पर आपत्ति जताई जिसके प्रतिउत्तर में चीनी सरकार का जवाब था कि, मानचित्र चीन की राष्ट्रीय सरकार द्वारा बनाया गया है और मौजूदा साम्यवादी शासन इसके लिए उत्तरदायी नहीं है। यह उत्तर भारत के लिए बहुत ही अफसोस जनक था। इसी संदर्भ में 22 मार्च 1959 में पं0 नेहरू ने चाऊ–एन–लाई को एक पत्र लिखा, जिसमें कहा गया–भूटानी भू–भाग को चीन के द्वारा अपना हिस्सा बताना भारत व चीन के मध्य की गई संधियों व समझौतों के खिलाफ हैं इसके प्रतिउत्तर में चाऊ–एन–लाई को एक पत्र लिखा, जिसमें कहा गया–भूटानी भू–भाग को चीन के द्वारा अपना हिस्सा बताना भारत व चीन के मध्य की गई संधियों व समझौतों के खिलाफ हैं इसके प्रतिउत्तर में चाऊ–एन–लाई का प्रतिउत्तर था कि चीन व भूटान के विवाद भारत व चीन के आपसी संबंधों के दायरे के बाहर आते हैं और चीन ने हमेशा भारत व भूटान के प्रति सदैव सम्मानजनक रवैया अपनाया है।

सन् 1952 में राजा जिग्में दोरजी वांगचुक के शासन काल में (1952–1972) सरकार की संरचना में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ। राजा वहाँ के मौजूदा राजनैतिक और आर्थिक व्यवस्था में सुधार और पुनर्गठन के लिए प्रतिबद्ध थे। उनका मानना था कि बदलती दुनिया की चुनौतियों का सामना करने के लिए यह सब जरूरी है। चूंकि भूटान राजनैतिक रूप से शेष दुनिया से अलग–थलग था, इसलिए पूंजीवाद, समाजवाद, साम्यवाद या उदारवाद आदि जैसे प्रमुख राजनीतिक विचारधाराओं का असर भूटान की राजनीतिक संस्कृति पर नहीं पड़ा। लेकिन दक्षिण एशिया में ब्रिटिश शासन के खात्मे की प्रक्रिया की शुरूआत और चीनी जनवादी गणराज्य की स्थापना के साथ ही तिब्बत के चीन में विलय की प्रक्रिया चलते भूटान नरेश को अपने राजनीतिक क्षेत्र के आधुनिकिकरण के लिए बाध्य होना पड़ा।

निष्कर्षः–

भूटान का भू सामरिक महत्व भारतीय सुरक्षा पर बड़ा प्रभाव डालता है। हल्के उतार–चढ़ाव के बावजूद भारत–भूटान सम्बन्ध सामान्य से बेहतर रहे। किन्तु छोटे हिमालयी राज्यों में चीन अपना दखल बढ़ाना चाहता है। कौटिल्य के मण्डल सिद्धान्त के अनुरूप दोनो देशों भारत एवं चीन के बीच व्यापारिक एवं सामरिक शक्ति प्रतिस्पर्धा है। भूटान में दोनों लगभग शून्य जोड़ खेल की स्थिति में है। भविष्य में भारत–भूटान सम्बन्धों की दिशा पूर्णतः नही तो कुछ हद तक चीन भूटान सम्बन्धों पर निर्भर करेगी। चीन ने नेपाल के साथ सम्बन्ध अच्छे बना लिए है। अपनी वन बेल्ट वन रोड परियोजना में शामिल किया जिस प्रकार से दक्षिण एशिया में चीन की बढ़ती सक्रियता से भारत की सुरक्षा के सामने चुनौतियां और बढ़ गई है।

चीन पाकिस्तान के सामरिक हितो की रक्षा करना चाहता है। जिसमें सैन्य–शस्त्रों की सप्लाई करने की व्यवस्था है। चीन लम्बी दूरी तक मार करने वाले हथियार और टैक्नोलॉजी पाकिस्तान को प्रदान कर रहा है। भारतीय सीमा क्षेत्र में चीन की हस्तक्षेप घटनाएं बढ़ती जा रही है। जो भारत की सुरक्षा के लिए खतरा है। चीन 16 जून 2017 को भूटान के डोकलाम क्षेत्र में 26 जुलाई 2017 को उत्तराखण्ड के चमोली के बारहोती में घुसपैठ और हिन्द महासागर में भी भारत की सुरक्षा के लिए चुनौतिया है। भारत भूटान को इन सुरक्षा चनुौतियों से निपटने के लिए अपनी सैन्य ताकत को बढ़ाने की आवश्यकता है। भारत को अपने रक्षा बजट में वृद्धि करने के साथ साथ अत्याधुनिक हथियारों में तेजी लानी चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. www.man.gov.in
2. http://www.mea.gov.in/portal/foreignrelation/Bhutan-Septamber-2017
3. www.mea.gov.in
4. इण्डिया टूडे, 19 जुलाई 2017
5. यादव, आर0एस0, भारत की विदेश नीति पियर्सन नई दिल्ली, 2013 पृष्ठ 230
6. झा, रूप नारायण, भारत–भूटान सम्बन्ध–1947–1997, जयपुर
7. www.dhyeyaias.com/wide-angle/india.Bhatan-relations-byvivekkojth.
8. वल्ड फोकस पत्रिका 2019

9- हिमालय सीमा सुरक्षा व भारतीय विदेश नीति में नेपाल व भूटान (1947–2005) शोधार्थी बाबु सिंह इस्के 2014